संस्कृत,पालि एवं प्राकृत विभाग

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,जबलपुर म.प्र.

अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना

(LOCF)

एम.ए. संस्कृत

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रस्ताव 2021

विषय–सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	परिचय	
2.	संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के उद्देश्य	
3.	स्नातक वैशिष्ट्य	
4.	योग्यता विश्लेषक	
5.	कार्यक्रम अधिगम परिणाम	
6.	शिक्षण अधिगम पद्धति	
7.	मूल्यांकन पद्धति	
8.	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	
9.	मूल्यांकन प्रविधि	
10.	संस्कृत साहित्य स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की संरचना	
11.	संस्कृत साहित्य स्नातकोत्तर कोर्स विषय की संरचना	

18-8-21

18-8-21

18/8/21

18/08/21

1. परिचय –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य अकेला रह नहीं सकता, वह समाज में संगठित होकर आपसी प्रेम तथा सामंजस्य से रहता है। समाज मनुष्यों का समूह है जो विधि, मानवीय तथा नैतिकमूल्य, नैतिकता, नैतिकता और विश्वास, परंपराओं तथा वर्जनाओं, रीति–रिवाजों आदि कुछ सामान्य मानकों, घटकों और विशेषताओं को स्वीकार करता है और अपनाता है। इन सभी अवयवों का समग्र रूप ही एक समूह, एक विशेष समुदाय/समाज/राष्ट्र की संस्कृति का निर्माण करता है। साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य समाज, देश अथवा राष्ट्र की विशिष्ट संस्कृति है, एवं संस्कृति के सभी घटकों को साहित्य दर्शाता है। **'वाक्यं रसात्मकं काव्यं'** के द्वारा आनंद की सृष्टि करता है। इसके अतिरिक्त आत्मसात करने के साथ ही अपने परिभाषित उद्देश्य के अलावा, साहित्य का अध्ययन विश्व के सभी देशों से संबंधित संस्कृति की विभिन्न विशेषताओं को समझने और उनका विश्लेषण करने में भी मदद करता है। जब हम संस्कृत की बात करते हैं तो स्पष्ट है कि समस्त भाषाओं की यह जननी है। कोई शब्द किस प्रकार निर्मित होता है और उसका अर्थ निश्चित कैसे होता है, इसका ज्ञान संस्कृत भाषा से ही होता है। आज संगणक के क्षेत्र में संस्कृत सबसे मानक भाषा के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा सिद्ध करके अंगीकार की गई है। संस्कृत साहित्य, हस्तलिखित ग्रंथ एवं पाण्डुलिपियां अपने में अपार संपदा समाहित किये हुए हैं। इसमें निहित तत्त्व ज्ञान–विज्ञान की प्रत्येक विधा को आधार प्रदान करते हैं। गणित, भौतिकी, रसायन, वास्तु, चित्रकला, राजनीति, अर्थनीति आदि व्यापक रूप से प्रचलित विधाओं का मूल उत्स संस्कृत वाङ्मय है।

उपर्युक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुये रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर ने सन् 1960 में अपने विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग में द्विवर्षीय उपाधि कार्यक्रम स्नातकोत्तर (एम.ए.) संस्कृत से आरंभ किया। विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में संस्कृत अध्ययन मण्डल की अनुशंसा पर कार्यक्रम की पाठ्यक्रम सामग्री समय–समय पर निरंतर परिवर्तन के अधीन है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देश और नवीन शिक्षा नीति के अनुसार अध्ययन मण्डल संस्कृत द्वारा अपना एल.ओ.सी.एफ. आधारित पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है।

2. संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के उद्देश्य

संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम कार्यक्रम का उद्देश्य है– ज्ञान के विविध आयामों का स्पष्टीकरण, परिपक्व मस्तिष्क का निर्माण, कौशल विकास, बृहद् दृष्टिकोण, अध्ययन के द्वारा प्राप्त तथा अर्जित जीवन मूल्यों का अपने जीवन तथा व्यवहार में सम्मिश्रण, व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास एवं समाज तथा राष्ट्रोपयोगी नागरिक तैयार करना है, जिन्हें निम्नांकित बिंदुओं में और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है–

1. विद्यार्थियों को संवेदनशील नागरिक बनाना।
2. एक कुशल वक्ता तथा आकर्षक स्वावलंबी व्यक्तित्व का निर्माण करना।
3. समाज और समुदाय के प्रति संवेदनशील दृष्टि का विकास करना।
4. राष्ट्रीय चेतना का विकास करना।
5. मानवीय मूल्यों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।
6. साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रवाद के सही अर्थों को बताना।

18-8-21

18/08/21

18/8/21

7. मूलभूत कौशल जैसे लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति का विकास करना
8. स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक के विशिष्ट साहित्य से परिचित कराना।
9. भाषा संबंधी कौशल का विकास करना।
10. उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही–सही ज्ञान कराना।
11. समाज के विभिन्न समुदायों के प्रति सहिष्णुता की भावना का विकास करना।
12. विभिन्न साहित्यिक विधाओं की जानकारी देना।

3. स्नातक वैशिष्ट्य

3.1 विषय का ज्ञान

1. साहित्य के विभिन्न रूपों एवं विधाओं की पहचान करना, उनके बारे में चर्चा करना तथा आलेख लिखने की योग्यता।
2. विभिन्न साहित्यिक और समीक्षात्मक अवधारणाओं को समझने की योग्यता।
3. पाठ को गंभीरतापूर्वक पढ़ने की योग्यता।
4. विभिन्न विधाओं के तथ्य, ऐतिहासिक संदर्भ को जानने की योग्यता।
5. भाषा वैज्ञानिक और शैलीगत विविधताओं को समझने की योग्यता।
6. विभिन्न प्रायोगिक सरंचनाओं की सहायता से पाठ विश्लेषण और पाठालोचन की योग्यता।
7. सामाजिक, धार्मिक, क्षेत्रीय, लैंगिक, राजनैतिक और आर्थिक संदर्भों में साहित्य को जानने की योग्यता।
8. विभिन्न संदर्भों में प्रश्ना करने की योग्यता।
9. साहित्य को पढ़ने के उपरांत समीक्षात्मक दृष्टि से स्थानीय और वैश्विक संदर्भों को जानने की उत्सुकता का विकास।
10. भारतीय मानकों और संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में साहित्य को जानने, समझने और विश्लेषण करने की योग्यता।

3.2 संप्रेषण कौशल

क. साहित्यिक, अकादमिक और व्यवहारिक प्रयोग हेतु संस्कृत भाषा बोलने और लिखने के कौशल का विकास।
ख. पढ़ने और सुनने के कौशल का विकास।
ग. स्पष्ट रूप से समीक्षात्मक अवधारणाओं का प्रयोग करने की योग्यता।
घ. अभिव्यक्ति के विभिन्न कौशलों का विकास।

3.3 आलोचनात्मक दृष्टिकोण

क. पढ़ने के पश्चात आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास।
ख. तुलनात्मक दृष्टि से अन्य भाषाओं के साहित्य के पुनरावलोकन का विकास।
ग. ऐतिहासिक संदर्भों में पाठ निर्धारण करने की योग्यता।
घ. साहित्य को विभिन्न कालखंडों में बाँटने की योग्यता ।

18/8/21

18-8-21

18/08/21

18/8/21

3.4 समस्याओं का समाधान

क. विश्लेषण कौशल के माध्यम से दूसरों को साहित्य से परिचित कराने की योग्यता।
ख. दूसरी भाषाओं के साहित्य की अंतर्वाही धारा को पकड़ पाने की योग्यता।
ग. अनुवाद के माध्यम से पारस्परिक संबंधों को खोज करने की योग्यता।

3.5 विश्लेषणात्मक और तार्किक दृष्टि का विकास

क. श्रेष्ठ साहित्य की विशेषता और कमजोरियों का विश्लेषण करने की योग्यता।
ख. तार्किक रूप से साहित्य के अनुशीलन की योग्यता।
ग. समीक्षा के नए बिंदुओं के अन्वेषण की योग्यता।

3.6 अनुसंधान कौशल

क. समस्याओं को खोजने की योग्यता ।
ख. शोध परिकल्पना और प्रश्नांकन की योग्यता ताकि जिज्ञासाओं का विभिन्न उत्तरों के माध्यम से शमन किया जा सके।
ग. शोध–पत्र हेतु योजना बनाना और शोध–पत्र लिखने की योग्यता।

3.7 समूह कार्य और समय प्रबंधन

क. कक्षा में होने वाली समूह चर्चा में सकारात्मक रूप से प्रतिभागिता की योग्यता।
ख. समूह कार्य में योगदान करने की रुचि।
ग. दिए गये समय में कार्य पूर्ण करने की योग्यता।
घ. समूह निर्माण की योग्यता।
ड. योग्यतानुसार समूह कार्य आवंटन का कौशल।

3.8 वैचारिक स्पष्टता

क. अध्ययन के उपरांत साहित्य के संबंध में वैचारिक दृष्टि का विकास।
ख. विचारों का साहित्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।
ग. स्थानीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक की वैचारिकी से परिचय।

3.9 स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि का विकास

क. साहित्यिक और समीक्षात्मक कृतियाँ पढ़ते समय स्वाध्याय की भावना का विकास।
ख. व्यक्तिगत शोध के साथ–साथ प्रश्न निर्माण और उत्तर देने की योग्यता का विकास।
ग. दूसरों को स्वाध्याय हेतु प्रेरित करने की योग्यता का विकास।

3.10 डिजिटल साक्षरता

क. सूचना एवं तकनीकी कौशल से परिचय ।
ख. तकनीकी उपकरणों का विधिवत उपयोग करने की योग्यता का विकास।

18-8-21 18/08/21 18.8.21

3.11 बहुसांस्कृतिकता

क. विभिन्न भाषाओं (भारतीय एवं विदेशी) के साहित्य के अध्ययन के द्वारा सांस्कृतिक बहुलता को जानने के प्रति रुचि।
ख. विभिन्न विविधताओं को स्वीकार करने की क्षमता का विकास।
ग. बहुसांस्कृतिकता को आत्मसात करने की योग्यता।

3.12 नैतिक और सामाजिक मूल्य

क. सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट रूप से समझने के कौशल का विकास।
ख. नैतिक मूल्य के प्रति जागरुकता और उनके प्रचार–प्रसार के लिये रुचि उत्पन्न होने की संभावना का विकास।
ग. साहित्य के माध्यम से विभिन्न सामाजिक समस्याओं/संदर्भों जैसे– पर्यावरण, धर्म, संस्कृति राजनीति, समाज आदि को जानने–समझने की जिज्ञासा का विकास।

3.13 जीवनपर्यंत प्रशिक्षण

क. साहित्य के अध्ययन के माध्यम से स्थायित्वबोध का विकास।
ख. व्यक्तिगत और समष्टिगत दृष्टिकोण का समायोजन करते हुए नए मूल्यों की स्थापना।
ग. ऐसी साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन जो चिरकालिक और स्थानीय से लेकर वैश्विक महत्त्व की हैं।

4. योग्यता निरूपक

संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने हेतु योग्यता निरूपक बिंदुओं में मुख्य रूप से शिक्षण के पाँच तत्व नियामक होंगे। ये हैं–

1. साहित्य और भाषा की समझ
2. उनका अनुप्रयोग
3. सम्प्रेषण
4. विस्तार
5. विषय के ज्ञान के आधार पर उसका समग्र विश्लेषण

इन तत्त्वों में विद्यार्थियों की जागरुकता का वह हिस्सा भी सम्मिलित होगा जिसके तहत वर्ग, लिंग, जाति, समुदाय और धर्म आदि शामिल रहते हैं ताकि इन सब के वैविध्य से विद्यार्थी परिचित हो सकें और पारदर्शिता के साथ इनके उद्देश्यों का चिंतन का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस तरह यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत पाठ्यक्रम के नियामक बिंदुओं में सम्प्रेषण, विश्लेषण और तार्किकता का स्पष्ट और मुख्य स्थान रहे।

संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने वाले प्रत्येक विद्यार्थी में निम्नांकित योग्यताओं का विकास होना आवश्यक हैं–

1. इस अध्ययन के बाद संस्कृत साहित्य के संबंध में उसे व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त हो सके ताकि वह उसे उचित ढ़ंग से दूसरों को हस्तांतरित कर सके।

18-8-21 18.8.21 18/08/21

2. विद्यार्थी को भारत में संस्कृत भाषा के प्रभाव तथा विकास की पूर्ण जानकारी हो सके। इसमें साहित्य की विभिन्न विधाओं, उनके उपरूपों और लेखन की पारंपरिक तथा आधुनिक पद्धतियों की पहचान भी सम्मिलित होनी चाहिए ताकि वह इन्हें श्रेणीबद्ध करते हुए आलोचनात्मक ढग से इसे ग्रहण कर सके।

3. बदलते हुए वैश्विक परिदृश्य में संस्कृत साहित्य की भूमिका को समझ सके और उसे दैनन्दिन और व्यावसायिक संदर्भों से जोड़कर उसे अभिव्यक्त कर सके। विषय के ज्ञान के संबंध में बात करते समय जब हम यह चर्चा करते हैं कि विद्यार्थी को साहित्य का पाठ करना आवश्यक होता है ताकि वह परंपराओं, संदर्भों, अंतर्वस्तु, शिल्प और उसके मूल्यों को जान सके, ऐसे में इस महत्वूपर्ण तत्त्व की कुंजी इसमें निहित है कि वे जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, वर्ग, राजनीति आदि के बारे में स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर पर एक विशेष दृष्टि का विकास कर सकें।

4. संस्कृत साहित्य और उसके अनुवाद के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी में स्पष्टतः लेखन कौशल का विकास भी होना चाहिए।

5. विद्यार्थी में विवेचना शक्ति का पर्याप्त विकास हो सके, यह भी आवश्यक है।

6. विद्यार्थी विभिन्न जीवन मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों दोनों के संदर्भ में अपने विचार और सुझाव दे सके ताकि कक्षा से लेकर समाज के बीच उसके ज्ञान का पर्याप्त प्रदर्शन हो सके।

7. विद्यार्थी को व्यवहारिक संस्कृत का ज्ञान भी हो सके ताकि वह जीवन के विभिन्न मंचों यथा– कक्षा, कार्यालय, जनसंचार और तकनीकी से जुड़े मंचों पर विभिन्न रूपों में अपनी अभिव्यक्ति दे सके। ये रूप रिपोर्ट, परियोजना, सूचना, आलेख अथवा समाचार आदि हो सकते हैं।

8. रोजगार के क्षेत्र में संस्कृत साहित्य और भाषा का क्या महत्त्व है इसकी पहचान कर सके। वह अध्यापन, प्रकाशन, अनुवाद, संप्रेषण, जनसंचार, राजभाषा, लेखन आदि कोई भी क्षेत्र हो सकता है।

9. साहित्य के माध्यम से मूल्यों का संप्रेषण समाज में करने की योग्यता भी विद्यार्थी में विकसित होनी चाहिए ताकि वह भारतीय परंपराओं और आदर्शों को भविष्य में अपने साथियों अथवा विद्यार्थियों के बीच प्रसारित प्रचारित कर सके।

यह पाठ्यक्रम विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों की योग्यता का उन्नयन करने में सहायक हो सकेगा, साथ ही साथ यह सामाजिक जटिलताओं को साहित्य के माध्यम से समझाने में भी निर्धारक के रूप में काम करेगा। साहित्य के साथ–साथ भाषा की समझ भी विद्यार्थियों में विकसित होगी जिसकी सहायता से विद्यार्थी चिंतन, विश्लेषण और मूल्यांकन से संबंधित आधार बिंदुओं को जान सकेंगे। उनकी रोजगार पाने की योग्यता तो विकसित होगी ही, वे विभिन्न संदर्भों को भी जान सकेंगे जो कि धारणा

18-8-21 18/08/21 18.8.21 18/8/21

विकास और समाधान में सहायक होगें। एक उत्तम भारतीय नागरिक होने के लिए आवश्यक है कि लोक से लेकर शास्त्र तक का साहित्यिक ज्ञान व्यक्ति को हो, तभी वह एक उत्तम विश्व नागरिक भी बन सकेगा और समाज के प्रति अपनी उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए ऋणमुक्त हो सकेगा।

5. कार्यक्रम अधिगम परिणाम

संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि से संबद्ध अधिगम परिणाम इस प्रकार है–

1. साहित्य संप्रेषण के आधार बिंदुओं की जानकारी देना ताकि साहित्य के संबंध में एक स्पष्ट समझ विकसित हो सके।

2. संस्कृत साहित्य और भाषा का व्यवस्थित और तर्कसंगत ज्ञान कराना ताकि उसके सैद्धांतिक पक्ष और साहित्यिक विकास के संबंध में पर्याप्त जानकारी मिल सके।

3. साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़ने और समझने की योग्यता का विकास करना।

4. साहित्य लेखन की विविध शैली और समीक्षात्मक दृष्टि का विकास करना।

5. स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक सांस्कृतिकता के वृहद संजाल के बारे में जानकारी देना ताकि विद्यार्थी में साहित्यिक मूल्यांकन की योग्यता विकसित हो सके।

6. समीच्य दृष्टि और व्यवस्थित वैचारिकी का प्रदर्शन करना जिससे कि संस्कृत साहित्य के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा और प्रश्न उत्पन्न हो सके।

7. आधुनिक संदर्भों में तकनीकी संसाधनों को इस्तेमाल करते हुए संस्कृत साहित्य की जानकारी देना।
8. प्रत्येक स्तर पर जीवन मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों का निर्धारण करने की क्षमता और ज्ञान का विकास करना।

9. विद्यार्थी में लेखन, वाचन और श्रवण के साथ–साथ कल्पनाशक्ति का विकास करना जिससे कि उसके समग्र व्यक्तित्व में निखार आ सके।

10. साहित्य के अध्ययन के बाद रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान करते हुए रोजगार के नए मार्ग तलाशना।

11. वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है जिसमें अभिव्यक्ति की प्रधानता है, ऐसे में तकनीकी के विकास ने साहित्य संचरण को अत्यंत सुगम बना दिया है। इसी परिप्रेक्ष्य में संस्कृत साहित्य लेखन और अनुवाद का मंच प्रदान करना जिसका उपयोग कर जनसंचार से लेकर व्यक्तित्व विकास तक में विद्यार्थी निष्णात हो सके। विद्यार्थी की रुचियों को एक व्यवस्थित रूप देना और उन्हें विभिन्न विधाओं में से

18-8

18/8/21

18.8.21

18/8/21

चयन की स्वतंत्रता प्रदान करना ताकि वे स्नातकोत्त्र कार्यक्रम के पूर्ण होने के बाद खुद ही साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में से अपनी रुचि के अनुसार चयन कर सकें।

12. भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को जानने के प्रति जागरुकता पैदा करना भी हिंदी साहित्य के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है।

6. शिक्षण अधिगम पद्धति

सीखने की प्रक्रिया न केवल चुनौतीपूर्ण होती है बल्कि इसमें अनेक तत्व समाहित रहते हैं। सीखने के दौरान विद्यार्थी मनोरंजन भी प्राप्त करता है, स्वयं उसमें संलग्न भी होता है और सुझाव भी देता है। इसीलिए विद्यार्थियों को अध्यापन के दौरान हमेशा इस बात के लिए प्रेरित करना चाहिए कि वे विषय केंद्रित रहते हुए स्वयं भी अन्वेषण की प्रक्रिया से गुजरें ताकि उसमें संलग्न भी रहे और उन्हें कुछ नया भी प्राप्त हो सके। विद्यार्थी को इस बात के लिए भी प्रेरित करना चाहिए कि वे प्रतिदिन पाठ्यक्रम के किसी एक हिस्से को केंद्र में रखे। उसकी आधारभूत संरचना को जानने का प्रयास करे और यह भी समझने का प्रयास करे कि उस हिस्से का उसके जीवन से लेकर समाज तक की क्या उपयोगिता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में निर्णय आधारित दृष्टिकोण के बजाय प्रायोगिक प्रक्रिया पर आधारित दृष्टिकोण पर बल दिया जाना चाहिए। यही एक उत्तम मार्ग है। अधिगम अर्थात् सीखना जीवनपर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है। मनुष्य जीवनपर्यन्त हर क्षण प्रत्येक घटना तथा प्रत्येक व्यक्ति से पग–पग पर सीखता है और आत्मसात करता है। विद्यार्थी जीवन में भी सीखना एक महत्त्पूर्ण प्रकिया है जो विद्यार्थी के बेहतर भविष्य निर्माण में एक निर्धारक तत्त्व होता है। एक जागरुक विद्यार्थी सम्मुख घटित प्रत्येक पल, प्रत्येक घटना, प्रत्येक गतिविधि तथा प्रत्येक स्रोत से सीखता है तथा सीखना उस विद्यार्थी का परम उद्देश्य होना चाहिये। प्रत्येक विद्यार्थी को अधिगम प्रकिया हेतु प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है। बिना बोध के कंठस्थ करने के स्थान पर शिक्षा केन्द्रित अधिगम हेतु विद्यार्थी को सर्वदा प्रयत्नशील रहना होगा। पाठ्यक्रम के विभिन्न क्षेत्रों पर नित्य ध्यान–केन्द्रित करना चाहिये तथा उसके मूल सिद्धान्तों तथा शिक्षाओं का जीवन एवं समाज में अनुप्रयोग तथा अनुपालन प्रत्येक विद्यार्थी को करना चाहिये।

अध्यापकों को अनुपातिक ढ़ंग से 20:30:50 की पद्धति का व्यवहार करना चाहिए। इसमें व्याख्यान का हिस्सा 20 प्रतिशत हो, दृश्य का हिस्सा 30 प्रतिशत और अनुभवजन्य चीजें 50 प्रतिशत रहे। इस अनुपात को तात्कालिक आवश्यकताओं के संदर्भ में बदला भी जा सकता है। संस्थाएँ या विश्वविद्यालय ज्ञान संप्रेषण के विभिन्न माध्यम का उपयोग करते हुए प्रक्रिया आधारित अधिगम और समग्र विकास को केंद्र में रखकर उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकते हैं। ये माध्यम निम्न प्रकार से हो सकते हैं–

6.1 व्याख्यान

संबद्ध विषय पर आधारित व्याख्यान ऐसे हों जो न केवल विद्यार्थी की रुचि जागरुक करे बल्कि उन्हें इस बात की भी प्रेरणा दे कि वे संबद्ध विषय के बारे में वे स्वयं भी अन्य सामग्री का संचयन करें और उसका अध्ययन करें। व्याख्यान

18-8-2
18/08/21
18.8.21

द्विपक्षीय होने चाहिए न कि एकांगी। इससे विद्यार्थी स्वयं भी व्याख्यान में हिस्सा ले सकेगा और अपने विचार या जिज्ञासा भी प्रगट कर सकेगा। इस प्रकार उसकी अंतर्दृष्टि विकसित होगी और वह कुछ सोचने के लिए भी तत्पर होगा।

6.2 संवाद तथा बहस

कक्षाध्यापन में अध्यापक को संवाद को बढ़ावा देना चाहिए ताकि विद्यार्थी विद्यार्थी के बीच, विद्यार्थी अध्यापक के बीच अथवा समूह रूप में विचार विनिमय और संवाद स्थापित हो सके और विद्यार्थियों की विश्लेषण, विवेचन की योग्यता का विकास हो। यदि इस प्रकार का कौशल विद्यार्थियों में विकसित होता है तो वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में स्वयं को अभिव्यक्त करने में सफल हो सकेगा।

6.3 परिवेश का सृजन

अध्यापक को कक्षाध्यापन के दौरान पढ़ाये जा रहे पाठ से संबद्ध परिवेश का सृजन करने का प्रयास करना चाहिए। यह संवाद वाचन, अभिनय या सामान्य पाठ वाचन द्वारा भी संभव होता है। इसे स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भों का भी ज्ञान कराना चाहिए ताकि तुलनात्मक दृष्टि का विकास हो सके।

6.4 समकालीन साहित्य का ज्ञान

अध्यापक को कक्षाध्यापन के दौरान समकालीन साहित्य का ज्ञान भी देना चाहिए। यह विश्लेषण और विवेचन की योग्यता को विकसित कर पायेगा।

6.5 अभिनय पद्धति का प्रयोग

कक्षाध्यापन के दौरान अध्यापक अभिनय पद्धति के माध्यम से भी अध्यापन कर सकता है। इससे विद्यार्थियों की रुचि भी जागृत होती है और वे स्वयं उसमें भाग लेकर उससे जुड़ भी सकते हैं। कविताओं के संदर्भ में उनका पाठ या गायन भी करवाया जा सकता है। एकांकी या बड़े नाटकों के अध्यापन के साथ–साथ उनका पूर्णकालिक मंचन भी हो सकता है। कहानियों के अध्यापन में उनका नाट्य रूपांतरण करवाया जा सकता है। इस प्रकार न केवल सामूहिक रूप से कार्य करने की स्थिति निर्मित होगी बल्कि विद्यार्थियों में परस्पर सामंजस्य की भावना का विकास भी हो सकेगा।

6.6 अध्ययन से संबंधित पर्यटन

साहित्य के अध्ययन से संबंधित पर्यटन भी कराया जा सकता है। यदि पाठ्यक्रम में सम्मिलित साहित्यकारों में कुछ उसी नगर या आसपास के हैं तो उनके जन्मस्थान अथवा उनसे जुड़ी जगहों का पर्यटन किया जा सकता है। यदि कतिपय लेखक जीवित हैं तो उन्हें बुलाकर अथवा उनके पास जाकर उनके साहित्य के साथ–साथ साहित्य के अन्य अवयवों की चर्चा भी की जा सकती है। ये भ्रमण विद्यार्थियों को यथार्थ जीवन की स्थितियों तथा अधिगत हेतु कार्यात्मक विविधता को समझने हेतु अवसर प्रदान करते है। इसमें ज्ञान–सृजन, संरक्षण, प्रसार हेतु विभिन्न ऐतिहासिक, सांस्कृतिक,धार्मिक स्थलों का भ्रमण सम्मिलित हो सकता है।

18.8.21 18/08/21 18.8.21

शिक्षण संस्था इसे अपने तरीके से प्रभावी तथा ज्ञानार्जन को तीव्र एवं रचनात्मक बना सकते हैं जो छात्रों की रुचि विषय के प्रति बढ़ाते हैं।

6.7 क्षेत्रीय अथवा परियोजना कार्य

सुनने में भले ही थोड़ा यह बड़ा अजीब लगे किंतु यह आवश्यक है कि कक्षाध्यापन में भी इस पद्धति को अपनाया जाना चाहिए। विद्यार्थी स्वयं विविध विधाओं में लिख सकते हैं अथवा संबंधित क्षेत्र का भ्रमण कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

6.8 तकनीकी का सहयोग

वर्तमान समय में तकनीकी में अनेक अनुपलब्ध चीजों को सुगम बना दिया है। आज यदि हमें दिवंगत साहित्यकारों को सुनने की या देखने की जिज्ञासा है तो वह सहज रूप में पूर्ण हो सकती है। जैसे यदि कोई विद्यार्थी किसी बड़े रचनाकार का रचनापाठ उसके मुँह से सुनना चाहता है तो आश्चर्य नहीं कि वह इंटरनेट के माध्यम से उसे सुन सके। इसी प्रकार वह तमाम अनुपलब्ध और दुर्लभ सामग्री को भी सर्च इंजन के माध्यम से खोज सकता है।

इसके अतिरिक्त अध्यापक अन्य नवाचारी पद्धतियों अथवा माध्यमों का उपयोग अपनी कक्षा में कर सकता है जो एक सराहनीय कदम होगा।

7. मूल्यांकन पद्धति

7.1 कार्यक्रम अधिगम परिणाम और पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम का संतुलन

स्नातकोत्त्र संस्कृत साहित्य के विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मूल्यांकन निम्न प्रकार से किया जायेगा।

1. कार्यक्रम अधिगम परिणाम (स्नातक निरूपक)
2. पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम (गुणवत्ता निरूपक)

7.2 मूल्यांकन की प्राथमिकताएँ

यह अपेक्षित होना चाहिए कि अंतिम परीक्षा के आधार पर मूल्यांकन करने के बजाय निर्धारित मूल्यांकन पद्धतियों में प्राथमिकताएँ तय करें अर्थात् सेमेस्टर के अनुसार परीक्षा परिणाम तैयार किए जाएँ न कि वार्षिक परीक्षा के आधार पर। परीक्षा के अंतर्गत आंतरिक मूल्यांकन, सतत मूल्यांकन और सत्रार्द्ध के अंत में ली जाने वाली परीक्षा सम्मिलित हो। आंतरिक मूल्यांकन में कक्षा में आयोजित की जाने वाली मासिक परीक्षा, परियोजना कार्य आदि के अंक भी सम्मिलित रहने चाहिए। इस प्रकार प्रशिक्षु या विद्यार्थी के मूल्यांकन की सतत प्रगति से अवगत हुआ जा सकता है। कक्षा के दौरान ली जाने वाली आकस्मिक परीक्षा में पुस्तक सहित और पुस्तक रहित परीक्षा जो एक घंटे अथवा दो घंटे की भी हो सकती है, ली जानी चाहिए। इसी प्रकार परियोजना कार्य आस पास परिवेश, सामाजिक समस्याओं और उनके समाधान आदि पर आधारित हो। रचनात्मक लेखन को भी परियोजना का विषय बनाया जा सकता है। परियोजना कार्य एकल रूप में अथवा समूह बनाकर भी लिया जा सकता है, इसी प्रकार समस्यापूर्ति दी जा सकती है। त्वरित आलेख भी सम्मिलित किया जा सकता

है। यह त्वरित आलेख शब्द सीमा में भी बंधा हो सकता है और पृष्ठ सीमा में भी। मौखिक प्रस्तुतियाँ, संगोष्ठी आदि में प्रतिभागिता, साक्षात्कार, लघु उत्तरीय प्रश्न और तकनीकी ज्ञान के परीक्षण के आधार पर भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए, इस प्रकार विद्यार्थी का समग्र मूल्यांकन हो सकेगा।

7.3 अधिगम परिणाम तालिका

मूल्यांकन पद्धति में अंक विभाजन करते समय संस्थाओं को स्पष्ट रूप से यह उल्लेख करना चाहिए कि किस कार्य हेतु कितनी क्रेडिट्स दी जा रही हैं और उनका विभाजन करते समय प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए अधिभार तय किये जाने चाहिए। निम्नांकित तालिका के माध्यम से अधिगम परिणाम अंकपत्र को समझने में आसानी होगी। (तालिका अंत में दी गई है।)

तालिका संख्या 1 कोर कोर्स – 12

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम	वेद	वेदांग	भाषाविज्ञान	दर्शन	काव्यशास्त्र	भारतीय संस्कृति	महाकाव्य	नाट्यशास्त्र	संस्कृत वाङ्मय	रूपक	गद्य,पद्य एवं चम्पू	व्याकरण एवं निबंध
जीवन और साहित्य के मूल्य की समझ	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	
साहित्य के इतिहास का व्यवस्थित ज्ञान	√	√			√		√	√	√	√	√	
साहित्य के सिद्धांतों का ज्ञान	√				√		√	√				√
साहित्यिक पाठ का मूल्यांकन	√	√			√		√	√	√	√	√	√
आलोचनात्मक विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
भाषा के विभिन्न क्षेत्रों की समझ	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
व्यवहारिक जीवन में सृजनात्मक और आलोचनात्मक ज्ञान का समावेश	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
स्नातकोत्तर के बाद जीविकोपार्जन के क्षेत्र एवं संभावनाएं	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के प्रति जागरूकता	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
अभिव्यक्ति के विभिन्न कौशलों का विकास	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√
समाजिक परिप्रेक्ष्य मे साहित्यिक आंदोलनों का ज्ञान	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√	√

तालिका संख्या 2 इलेक्टिव कोर्स – 4

18-8-21   18/08/21   18/8/21   18.8.21

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम	भारतीय दर्शन	भारतीय दर्शन	काव्य	काव्य
जीवन और साहित्य के मूल्य की समझ	√	√	√	√
साहित्य के इतिहास का व्यवस्थित ज्ञान	√	√	√	√
साहित्य के सिद्धांतों का ज्ञान	√	√	√	√
साहित्यिक पाठ का मूल्यांकन	√	√	√	√
आलोचनात्मक विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास	√	√	√	√
भाषा के विभिन्न क्षेत्रों की समझ	√	√	√	√
व्यवहारिक जीवन में सृजनात्मक और आलोचनात्मक ज्ञान का समावेश	√	√	√	√
स्नातकोत्तर के बाद जीविकोपार्जन के क्षेत्र एवं संभावनाएं	√	√	√	√
भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के प्रति जागरुकता	√	√	√	√
अभिव्यक्ति के विभिन्न कौशलों का विकास	√	√	√	√
समाजिक परिप्रेक्ष्य मे साहित्यिक आंदोलनों का ज्ञान	√	√	√	√

7.4 अधिभार निर्धारण

कोई भी संस्था अधिभार निर्धारण करते समय पूर्व सेमेस्टर (सत्र) और उत्तर सेमेस्टर (सत्र) में 60:40 के अनुपात में अंकों का निर्धारण कर सकती है। यह निर्धारण अलग अलग हो सकता है। उदाहरण के लिए 60 प्रतिशत को 20+10+10+15+05 में बांटा जा सकता है। इसके अंतर्गत विभिन्न गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं जैसे 20 प्रतिशत लिखित कक्षा परीक्षा के लिए, 20 प्रतिशत व्यक्तिगत परियोजना कार्य के लिए, 10 प्रतिशत समूह परियोजना कार्य के लिए, 15 प्रतिशत उपस्थिति व अन्य प्रकार के व्यवहार के लिए और 05 प्रतिशत मौखिक प्रस्तुति के लिए हो सकते हैं। इसी प्रकार 40 प्रतिशत अंक सत्र के अंत में दी जाने वाली परीक्षा के लिए निर्धारित किए जा सकते हैं। उक्त प्रश्नपत्र में तीन तरह के प्रश्न होने चाहिए। 1. बहुविकल्पीय, 2. लघु उत्तरीय, 3. दीर्घ उत्तरीय। इसे सुविधानुसार 10+15+15 में विभाजित किया जा सकता है। अध्यापक प्रश्नों का निर्धारण इस प्रकार करे कि उस सम सत्र में पढ़ाया जाने वाला संपूर्ण पाठ्यक्रम उसमें समाहित रहे। प्रतिशत व्यक्तिगत परियोजना कार्य के लिए, 10 प्रतिशत समूह परियोजना कार्य के लिए, 15 प्रतिशत उपस्थिति व अन्य प्रकार के व्यवहार के लिए और 05 प्रतिशत मौखिक प्रस्तुति के लिए हो सकते हैं।

7.5 नवाचार और लचीलापन

अध्यापकों को सदैव नवाचार करने और लचीलापन अपनाने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए ताकि इस प्रपत्र में अधिगम परिणाम से संबद्ध और रेखांकित किए गए बिंदुओं का सही अर्थों में उपयोग किया जा सके। मूल्यांकन से संबंधित सारे बिंदु स्पष्ट रूप से सभी उपयोगकर्ताओं को संप्रेषित किए जाने चाहिए। यदि इसमें किसी प्रकार का संशोधन अथवा परिवर्तन किया जाता है तो उसकी भी यथासमय सूचना देने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

7.6 स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व

स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व प्रत्येक उपयोगकर्ता के लिए अत्यन्त आवश्यक है। वास्तव में यह अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना की कुंजी है जो इसकी

18-8-21 18/08/21 18/8/21 18.8.21

सफलता का निर्धारक तत्व भी है। उदाहरण के लिए शोध कार्य में शोधार्थी को अधिक से अधिक पुस्तकालय का उपयोग करने, साहित्य का सर्वेक्षण करने मौलिक आधारों को जानने, तार्किक और सृजनात्मक योग्यता का विकास करने आदि के लिए प्रेरित करना चाहिए। यहाँ भी प्रत्येक गतिविधि के लिए अंक निर्धारण किए जा सकते हैं। किसी भी संस्था की उत्कृष्टता इस बात पर निर्भर करती है कि वे पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात किस प्रकार का परिणाम प्राप्त कर पा रहे हैं। यह भी कि वे अपने लक्ष्यों की पूर्ति में कितने सफल हैं। इस दृष्टि से नवाचार का होना अत्यंत आवश्यक है। इससे अध्ययन में और अध्यापन में पारदर्शिता बनी रहती है।

7.7 गतिविधियों का समूहन और समायोजन

विभिन्न गतिविधियों के कुछ समूह बनाये जा सकते हैं और उन्हें समायोजित करते हुए उनके लिए अधिभार तय किया जा सकता है। ऐसा करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रशिक्षण अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके। इस हेतु संस्थाएँ कुछ समूहों अथवा सभी समूहों का चयन कर सकती हैं ताकि विद्यार्थी का समुचित विकास हो। इन पद्धतियों में खुला साक्षात्कार, समूह चर्चा, एकल अथवा समूह प्रश्न सत्र, कक्षा प्रस्तुति, पुस्तकालय अथवा क्षेत्र विशेष का भ्रमण, टर्म पेपर, पोस्टर प्रस्तुतिकरण आदि सम्मिलित हो सकते हैं। प्रत्येक क्रेडिट के लिए कुछ घंटे भी निर्धारित किए जा सकते हैं।

7.8 पुनर्परीक्षण और संशोधन

प्रत्येक संस्था के लिए यह आवश्यक है कि वह पाठ्यक्रम का एक अंतराल के बाद पुनर्परीक्षण करे और यदि आवश्यक हो तो उसमें संशोधन भी करे। यह भी आवश्यक है कि संस्थाएँ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली के दिशा निर्देशों के आलोक में इस अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम को लागू करने हेतु अपने नियमों, परिनियमों और अधिनियमों में आवश्यक संशोधन और संयोजन करे ताकि इसमें दिये गए सुझावों को लागू किया जा सके।

7.9 एल.ओ.सी.एफ. की मूल भावना

यहाँ दिये गए अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना के दिशा निर्देश सुझाव की तरह हैं। अतः संस्थानों से अपेक्षा की जाती है कि वे इनके परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन पद्धतियों का निर्धारण तात्कालिक परिस्थितियों और संदर्भों के आलोक में इस प्रकार करें कि एलओसीएफ की मूल भावना बनी रहे। हिंदी साहित्य से संबंधित अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना का मूल उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक संदर्भों में सही मूल्यांकन किया जा सके ताकि उसका पारदर्शी और सही ढंग से परीक्षण हो सके।

18-8-21 18/08/21 18.8.21

 18/8/21

Choice Based Credit System Syllabus (Session July 2015)

पाठ्यक्रम संरचना और परीक्षा व मूल्यांकन की योजना

(Under Statutory Stipulation of University Ordinance No. 22

संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर

एम.ए. संस्कृत 4 सेमेस्टर प्रोग्राम में 4 थ्योरी पेपर एवं 1 स्किल डेवलपमेन्ट का पेपर होगा। प्रत्येक सेमेस्टर में प्रत्येक थ्योरी पेपर में अलग से ग्रेड पॉइन्ट के साथ न्यूनतम् 35 प्रतिशत अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा। संबंधित सेमेस्टर के बाद की पूर्ण अंतिम परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु प्रत्येक सेमेस्टर में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) में 5 ग्रेड पॉइन्ट के साथ न्यूनतम् 35 प्रतिशत अंक प्राप्त करना भी अनिवार्य है।

1. प्रत्येक सेमेस्टर में प्रत्येक पेपर का मूल्यांकन 100 अंकों का होगा जिसमें 60 अंक सेमेस्टर की अंतिम सैद्धांतिक (थ्योरी) परीक्षा हेतु तथा 40 अंक सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) हेतु निर्धारित होंगे।
2. सेमेस्टर के दौरान प्रश्न--पत्र से संबंधित शिक्षक प्रत्येक छात्र के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) का आंकलन 20 अंकों के तीन परीक्षणों से करेंगे, जिनमें से कम से कम दो परीक्षाएं लिखित होनी चाहिये, जबकि तीसरी परीक्षा प्रश्नोत्तरी/सेमिनार/ लघु कार्य परियोजना(असाइन्मेन्ट) के रूप में हो सकती हैं। सी.सी.ई. के लिये तीन में से दो सर्वश्रेष्ठ परीक्षाओं के अंकों की गणना की जायेगी। प्रत्येक परीक्षा के लिये एक घन्टे की अवधि निर्धारित होगी जो पढ़ाये गये निर्धारित सैद्धांतिक (थ्योरी) प्रश्न–पत्र की इकाई के बराबर होगी।
3. पाठ्यक्रम से संबंधित शिक्षक प्रश्न–पत्र निर्माण एवं प्रत्येक सेमेस्टर की अंतिम परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करेंगे। स्थायी आचार्यों के न होने पर विश्वविद्यालय द्वारा वैकल्पिक व्यवस्था की जायेगी।
4. प्रत्येक सेमेस्टर की अंतिम परीक्षा में प्राप्त कुल अंक एवं सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) के तहत दो परीक्षाओं में से सर्वश्रेष्ठ अंकों के द्वारा ग्रेड तय किया जायेगा।
5. नीचे दर्शाई गई तालिका के अनुसार ग्रेडिंग 10 अंकों के पैमाने पर होगी--

Letter Grade	Grade Points	Description	Range of Marks
O	10	Outstanding	90-100
A+	9	Excellent	80-89
A	8	Very Good	70-79
B+	7	Good	60-69
B	6	Above Average	50-59
C	5	Average	40-49
P	4	Pass	35-39
F	0	Fail	0-34
Ab	0	Absent	Absent

18-8-15 18/08/21 18.8.21 18/8/21

यहां पर Ci एक सेमेस्टर में निर्धारित पाठ्यक्रम की क्रेडिट की संख्या है वहीं Gi वह ग्रेड पॉइन्ट है जिसे छात्र ने संबंधित पाठ्यक्रम में प्राप्त किया है।

6. यदि कोई छात्र किसी भी पाठ्यक्रम में F या Ab ग्रेड प्राप्त करता है तो उसे पाठ्यक्रम में अनुत्तीर्ण माना जायेगा। जब विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग (utd) द्वारा उस पाठ्यक्रम की परीक्षा आयोजित की जायेगी तब विद्यार्थी को उस परीक्षा में उपस्थित होना होगा। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में प्राप्त अंकों को बढ़ाकर दोहराए गये सेमेस्टर परीक्षा में प्राप्त अंकों में जोड़ा जायेगा।

7. सेमेस्टर ग्रेड पॉइन्ट एवरेज (SGPA) और संचयी ग्रेड पॉइन्ट एवरेज (CGPA) की गणना छात्र द्वारा प्राप्त वैध और वर्चुअल क्रेडिट पॉइन्ट के भारित औसत के रूप में की जायेगी। SGPA और CGPA को दो दशमलव स्थान तक पूर्णांकित किया जायेगा और ग्रेड शीट में दर्ज किया जायेगा।

8. विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग द्वारा एक निश्चित समयावधि में जब भी सैद्धांतिक और प्रायोगिक परीक्षा आयोजित की जायेगी तब छात्र पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने हेतु कई बार प्रयासों का लाभ उठा सकते हैं।

9. सेमेस्टर ग्रेड पॉइन्ट एवरेज (SGPA) एक सेमेस्टर में छात्रों के द्वारा किये गये प्रदर्शन का एक पैमाना है। यह एक सेमेस्टर में निर्धारित विभिन्न पाठ्यक्रमों में एक छात्र द्वारा प्राप्त कुल क्रेडिट पॉइन्ट एवं उसी सेमेस्टर के दौरान प्राप्त कुल क्रेडिट का अनुपात है।

$$SGPA (S_i) = \sum (C_i \times G_i) / \sum C_i = \text{Total Credit Points/Total Credits}$$

10. संचयी ग्रेड पॉइन्ट एवरेज (CGPA) पूर्ण किये गये सभी सेमेस्टर में एक छात्र के समग्र संचयी प्रदर्शन का एक पैमाना है। CGPA एक छात्र द्वारा पूरे किये गये सभी सेमेस्टर में विभिन्न पाठ्यक्रमों में सुरक्षित कुल क्रेडिट अंकों का अनुपात है और सभी सेमेस्टर में सभी पाठ्यक्रमों के कुल क्रेडिट का योग है, अर्थात्

$$CGPA = \sum (C_i \times S_i) / \sum C_i$$

यहां पर Si संबंधित सेमेस्टर का SGPA है और वहीं Ci संबंधित सेमेस्टर में क्रेडिट की कुल संख्या है।

11. निबंध/लघु कार्य परियोजना आदि का मूल्यांकन 10 क्रेडिट पॉइन्ट के साथ किया जायेगा।
    - क. विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के विभागाध्यक्ष तथा विश्वविद्यालय परीक्षा समिति द्वारा सुझाए गये परीक्षकों के पैनल में से विश्वविद्यालय के कुलपति के द्वारा एक बाह्य परीक्षक की नियुक्ति की जायेगी।
    - ख. पर्यवेक्षक (सुपरवाइजर)/ आंतरिक परीक्षक विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग प्रमुख द्वारा नियुक्त किया जायेगा।

16

12. चार परीक्षकों के बोर्ड द्वारा कार्यक्रम के प्रत्येक सेमेस्टर के अंत में 5 वर्चुअल क्रेडिट की एक व्यापक मौखिक परीक्षा आयोजित की जायेगी जिनमें से कम से कम एक बाह्य परीक्षक होगा। कुलपति विभागाध्यक्ष अथवा विश्वविद्यालय परीक्षा समिति के परामर्श से बाह्य परीक्षक/ परीक्षकों की नियुक्ति करेंगे। इस संबंध में तीन परीक्षकों का कोरम बनाना होगा। विभागाध्यक्ष व्यापक वायवा वॉयस का समन्वय करेंगे। मौखिक परीक्षा में दिये गये ग्रेड ग्रेड शीट में अलग से दर्शाये जायेंगे।

13. यदि किसी कार्यक्रम में छात्रों की संख्या बहुत अधिक है तो एक से अधिक बोर्ड गठित किये जा सकते हैं। हालांकि प्रत्येक बोर्ड में कम से कम दो सदस्य होंगे–
    1. आंतरिक परीक्षक
    2. बाह्य परीक्षक

14. डिग्री प्रदान करने के लिये सभी आवश्यक्ताओं को पूरा करने पर सी.जी.पी.ए. की गणना की जायेगी और यह मान डिवीजन के साथ डिग्री पर दर्शाया जायेगा। अंतिम डिग्री निम्नानुसार प्राप्त विभाजन को भी इंगित करेगी–

क. प्रथम श्रेणी विशिष्टता के साथ– छात्र ने 8.00 या उससे अधिक के CGPA के साथ पहले प्रयास में डिग्री उपलब्धि हेतु न्यूनतम् संख्या में क्रेडिट अर्जित किया है।

ख. प्रथम श्रेणी – छात्र ने पहले प्रयास में 6.50 या उससे अधिक लेकिन 8.00 से कम CGPA के साथ पहले प्रयास में डिग्री उपलब्धि हेतु न्यूनतम् संख्या में क्रेडिट अर्जित किया है।

ग. द्वितीय श्रेणी – छात्र ने पहले प्रयास में 5.00 या उससे अधिक लेकिन 6.50 से कम CGPA के साथ पहले प्रयास में डिग्री उपलब्धि हेतु न्यूनतम् संख्या में क्रेडिट अर्जित किया है।

घ. उत्तीर्ण श्रेणी – छात्र ने पहले प्रयास में 4.00 या उससे अधिक लेकिन 5.0 से कम CGPA के साथ पहले प्रयास में डिग्री उपलब्धि हेतु न्यूनतम् संख्या में क्रेडिट अर्जित किया है।

15. यदि छात्र ने एक सेमेस्टर में कम से कम 12 वैध क्रेडिट प्राप्त किये हैं तो छात्र को अगले सेमेस्टर में पदोन्नत किया जायेगा। यदि छात्र किसी भी सेमेस्टर में 12 से कम वैध क्रेडिट प्राप्त करता है तो छात्र को पूरे सेमेस्टर को दोहराने के लिये कहा जायेगा और सेमेस्टर को शून्य सेमेस्टर माना जायेगा।

16. किसी सैद्धांतिक/प्रायोगिक पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति की अनुमति केवल उन्हीं उम्मीदवारों को दी जाती है जिन्हें पाठ्यक्रम में एफ या एबी मिलता है। पाठ्यक्रम को दोहराने के लिये छात्र को निर्धारित शुल्क का भुगतान करना होगा।

17. यूजीसी द्वारा समय–समय पर जारी दिशा–निर्देशों को लागू किया जायेगा।

18-8-2

18/08/21

18-8-21

SYLEBUS FOR CHOCE BASED CREDIT SYSTEM-
M.A.(SANSKRIT) PROGRAME-2020-21
R.D.V.V. JABALPUR

Semester	Discipline Specific Core Course SAC – 12 Paper	Discipline Specific Elective Course SAE – 4 Paper	Ability Enhancement & Skill Development Course SAS – 4 Paper
I	SAC 101 – वेद SAC 102 – वेदांग SAC 103 – पालि प्राकृत एवं भाषा विज्ञान	SAE 101- भारतीय दर्शन **अथवा** SAE 102- भारतीय दर्शन	SAS – 101 Skill Development
II	SAC 104 - सांख्य एवं मीमांसा SAC 105 - काव्यशास्त्र SAC 106 - भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण	SAE 103- काव्य – मेघदूत एवं कुमारसम्भव **अथवा** SAE 104- काव्य – कर्पूरमंजरी एवं विद्धशालभंजिका	SAS –102 Skill Development
III	SAC 107- महाकाव्य SAC 108- नाट्यशास्त्र SAC 109- संस्कृत वाङ्मय एवं आधुनिक विश्व	SAE 105- साहित्यशास्त्र – काव्यालंकार एवं काव्यप्रकाश **अथवा** SAE 106- साहित्यशास्त्र– काव्यादर्श एवं काव्यमीमांसा	SAS – 103 Skill Development
IV	SAC 110- रूपक SAC 111- गद्य, पद्य एवं चम्पू SAC 112- व्याकरण, अनुवाद एवं निबंध	SAE 107- विशेष कवि कालिदास **अथवा** SAE 108- विशेष कवि भवभूति	SAS – 104 Skill Development

18-8-21

18/08/21

18-8-21

18.08

Marks/Credit Distribution
Semester - I

Course Code	Course Title	Max.Marks 400			Max.Credit 28
		End Semester Exam.	CCE	Total	
SAC 101	वेद	60	40	100	5
SAC 102	वेदांग	60	40	100	5
SAC 103	पालि, प्राकृत एवं भाषा विज्ञान	60	40	100	5
SAE 101 SAE 102	भारतीय दर्शन अथवा भारतीय नीतिशास्त्र	60	40	100	5
SAS 101	SKILL DEV				4

CVV – 1	Comprehensive Viva-vice			50	4 (Virtual)

Semester-II

Course Code	Course Title	Max.Marks 400			Max.Credit 28
		End Semester Exam.	CCE	Total	
SAC 104	सांख्य एवं मीमांसा	**60**	**40**	**100**	**5**
SAC 105	काव्यशास्त्र	**60**	**40**	**100**	**5**
SAC 106	भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण	**60**	**40**	**100**	**5**
SAE 103 **SAE 104**	काव्य–मेघदूत एवं कुमारसंभव अथवा काव्य–कर्पूरमंजरी एवं विद्धशालभंजिका	**60**	**40**	**100**	**5**
SAS 102	**SKILL DEV**				**4**

CVV – 2	Comprehensive Viva-vice			50	4 (Virtual)

Semester-III

Course Code	Course Title	Max.Marks 400			Max.Credit 28
		End Semester Exam.	CCE	Total	
SAC 107	महाकाव्य	60	40	100	5
SAC 108	नाट्यशास्त्र	60	40	100	5
SAC 109	भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण	60	40	100	5
SAE 105 SAE 106	साहित्यशास्त्र–काव्यालंकार एवं काव्यप्रकाश **अथवा** साहित्यशास्त्र–काव्यादर्श एवं काव्यमीमांसा	60	40	100	5
SAS 103	SKILL DEV				4

CVV – 3	Comprehensive Viva-vice			50	4 (Virtual)

18-8-21

18/08/21

18-8-21

Semester-IV

Course code	Course Title	Max.Marks 400			Max.Credit 28
		End Semester Exam.	CCE	Total	
SAC 110	रूपक	60	40	100	5
SAC 111	गद्य, पद्य एवं चम्पू	60	40	100	5
SAC 112	व्याकरण, अनुवाद एवं निबंध	60	40	100	5
SAE 107 SAE 108	विशेष कवि कालिदास अथवा विशेष कवि भवभूति	60	40	100	5
SAS 104	SKILL DEV				4

CVV – 4	Comprehensive Viva-vice			50	4 (Virtual)

18-8-21 18/08/21

18.8.21

18.8

SYLEBUS FOR CHOICE BASED CREDIT SYSTEM- M.A.(SANSKRIT) PROGRAME-2021
R.D.V.V. JABALPUR

Discipline Specific Core Course

Semester : प्रथम सेमेस्टर

Paper Title : SAC 101 वेद　　　　　　　　कुल 100 अंक (60/40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक साहित्य का व्यापक परिचय देना है जिससे छात्र प्राचीन भारतीय ज्ञान तथा पूर्वजों की इस महानतम संस्कृति से परिचित हो सकें। इस प्रश्नपत्र में कुछ वैदिक देवताओं का विशेष अध्ययन है जो विशेषतः सृष्टि उत्पत्ति विषयक एवं समाज की उन्नति तथा सुधार विषयक है। वैदिक साहित्य का इतिहास हमारी संस्कृति तथा वैदिक वाङ्मय के प्रति छात्रों की रुचि जाग्रत करना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होंगे–

1. वेदों विशेषतः ऋग्वेद की मूलभूत धारणाओं के प्रति छात्रों में बुनियादी चिंतन का विकास।
2. वैदिक देवताओं की प्रकृति, विशेषताओं तथा उनके महत्त्व का परिचय प्राप्त होगा।
3. प्राचीन और आधुनिक विचारकों तथा टीकाकारों की टीकाओं द्वारा अर्थ समझने में सक्षम।
4. हमारी प्राचीनतम बहुमूल्य भारतीय धरोहर के रूप में वेदों की महत्ता से अवगत होंगे।

इकाई – 1.　ऋग्वेद–सूक्त

(1) अग्नि 1.1　　(2) इन्द्र 2.12
(3) विश्वामित्र–नदी संवाद– 3.33　　(4) वाक् 10.125
(5) पर्जन्य 5.83

चार मंत्र दिए जायेंगे उनमें से किन्हीं दो मंत्रों की व्याख्या करनी होगी –　12

इकाई –2.　ऋग्वेद–सूक्त

(1) हिरण्यगर्भ 10.121　　(2) नासदीय 10.129
(3) पुरुष 10.90　　(4) कितव 10.34

चार मंत्र दिए जायेंगे उनमें से किन्हीं दो मंत्रों की व्याख्या करनी होगी –　12

इकाई –3. यजुर्वेद तथा अथर्ववेद के सूक्त

(1) शिवसङ्कल्प 34.1–6
(2) योगक्षेम 22.22
(3) साम्मनस्य 3.30
(4) राष्ट्राभिवर्धनम् 1.29

चार मंत्र दिए जायेंगे उनमें से किन्हीं दो मंत्रों की व्याख्या करनी होगी – 12

इकाई – 4 ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद्

(1) वाक् मनस् संवाद शतपथ ब्राह्मण 1.4.5.89.13
(2) पुरुषविभूति एतरेय आरण्यक 11.17
(3) पंच महायज्ञ तैत्तरीय आरण्यक 11.10
(4) ईशावास्योपनिषद्

इस इकाई में उक्त से संबंधित सामान्य पश्न पूछे जायेंगे – 12
(कोई चार प्रश्न अथवा टिप्पणियाँ पूछी जायेंगी जिनमें से किन्हीं दो का उत्तर देना होगा)

इकाई – 5 वैदिक साहित्य पर परिचयात्मक प्रश्न –

(दो प्रश्न पूछे जायेंगे किसी एक का उत्तर देना होगा) 12

अनुशंसित ग्रन्थ–:

1. न्यू वैदिक सिलेक्शन मास्टर भाग–2 बज्र बिहारी चौबे, भारतीय विद्या प्रकाशन
2. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – आचार्य बलदेव उपाध्याय

18-8-21

18/08/21

18.8.21

18/8/21

Discipline Specific Core Course
Semester : प्रथम सेमेस्टर

Paper Title : SAC 102 वेदाङ्ग   कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को ऋग्वेद से लेकर वेदांग, निरुक्त तक वैदिक साहित्य का व्यापक परिचय देना है। इसमें वैदिक देवताओं को जानने तथा परिचय प्राप्त करने हेतु ऋग्वेद के कुछ महत्त्वपूर्ण छंद भी सम्मिलित हैं। निरुक्त के कुछ अंशों के अध्ययन से शब्दों की वैदिक व्युत्पत्ति को समझने में सहायता मिलती है जबकि वैदिक व्याकरण वैदिक भाषा की विशिष्टता की व्याख्या करता है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होंगे–

1. वेदों की मूलभूत अवधारणाओं का सम्यक बोध होगा जिससे छात्रों को वैदिक वैशिष्ट्य का परिचय प्राप्त होगा।
2. निरुक्त या व्युत्पत्ति के अनुप्रयोग के माध्यम से वैदिक छंदों के सार को समझने के लिये निरुक्त की भूमिका की सराहना करने में सक्षम होंगे।
3. वैदिक स्वर और व्याकरण के ज्ञान के साथ वैदिक मंत्रों को लयबद्ध एवं छन्दोबद्ध उच्चारण कराने तथा प्रयोग में लाने की दृष्टि से सक्षम होंगे।
4. अन्य वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन में इस ज्ञान के प्रयोग में समर्थ होंगे।

इकाई – 1 निरुक्त–प्रथम अध्याय (यास्क) (व्याख्या एवं निर्वचन)	12
इकाई – 2 निरुक्त–द्वितीय अध्याय (यास्क) (व्याख्या एवं निर्वचन)	12
इकाई – 3 ऋक्प्रातिशाख्य प्रथम पटल (व्याख्या एवं विवेचनात्मक प्रश्न)	12
इकाई – 4 पाणिनीय शिक्षा (व्याख्या एवं विवेचनात्मक प्रश्न)	12
इकाई – 5 वैदिक वाङ्मय का परिचय (किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी)	12

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. निरुक्त – उमाशंकर शर्मा ऋषि।
2. पाणिनीय शिक्षा – डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय।
3. ऋक् प्रातिशाख्य – डॉ. वी.के. वर्मा।
4. वैदिक साहित्य और संस्कृति – बलदेव उपाध्याय।

18.8.21

18/08/21

18.8.21

Discipline Specific Core Course

Semester : प्रथम सेमेस्टर

Paper Title : SAC 103 पालि, प्राकृत एवं भाषा विज्ञान कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को भाषा शास्त्र और आधुनिक भाषाविज्ञान की कुछ महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं और सिद्धान्तों से परिचित कराना है। इन अवधारणाओं और सिद्धान्तों के प्रकाश में संस्कृत भाषा के सिंहावलोकन एवं विश्लेषण में मदद करना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम–

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. भाषा तथा भाषा विज्ञान का परिचय प्राप्त होगा जिससे विश्व की अन्य भाषाओं के वर्गीकरण में सिद्धहस्त होंगे।
2. भारोपीय भाषा परिवार का परिचय द्वारा संस्कृत पालि, प्राकृत एव अपभ्रंश का उद्भव विकास से अवगत होंगे तथा तुलनात्मक अध्ययन करने में सक्षम होंगे।
3. ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि परिवर्तन के कारण तथा दिशाएं, ध्वनि नियम, शब्द में अंतर इत्यादि महत्त्पूर्ण विषयों को समझ सकेंगे।
4. वाक्य एवं अर्थ विज्ञान वाक्य का लक्षण तथा भेद, वाक्य परिवर्तन के कारण तथा दिशाएं,अर्थ परिवर्तन के कारण तथा दिशाएं आदि विषयों को गहराई से समझेंगे।

इकाई – 1 पालि 12

बावेरूजातकम्, महाभिनिवक्खनम्, धम्मपदसंगहो, मायादेवियासुपिनं
(संस्कृत छाया अथवा अनुवाद)

इकाई – 2 प्राकृत 12

गिरिनार अभिलेख, खारवलेस्य हाथीगुम्फा गुहाभिलेख, गाहासत्तसई,
कर्पूरमंजरी, अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(उपयुक्त दोनों इकाइयों के पाठ्यांश पालि प्राकृत अपभ्रंश संग्रह से निर्धारित हैं)

इकाई – 3 भारतीय भाषाशास्त्रीयचिंतन 12

पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि, भर्तृहरि, भट्टोजिदीक्षित

इकाई – 4 भाषाविज्ञान का स्वरूप, भाषा विज्ञान की शाखाएं भारोपीय भाषा परिवार 12

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएं (पालि, प्राकृत, अपभ्रंश)

इकाई – 5 ध्वनिविज्ञान – (वाग्यन्त्र, ध्वनिपरिवर्तन, ध्वनियों का वर्गीकरण) 12

अर्थविज्ञान (अर्थावबोध–संकेतग्रह, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, अर्थपरिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ) वाक्य विज्ञान – (वाक्य का स्वरूप एवं प्रकार)

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. पालि–प्राकृत–अपभ्रंश संग्रह–रामअवध पाण्डेय। विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
2. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी।
3. भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका – डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा

18.8.21

18/08/21

Discipline Specific Elective Course
Semester : प्रथम सेमेस्टर
Paper Title : SAE 101 भारतीय दर्शन

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को भारतीय दर्शन के कुछ महत्त्वपूर्ण मूलभूत सिद्धान्तों के व्यापक और गहन अध्ययन द्वारा सशक्त विचारशक्ति को हासिल करने में सक्षम बनाना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम–

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होंगे–

1. दर्शन के विभिन्न सिद्धान्तों के द्वारा दर्शन शास्त्र को समझने में सक्षम होंगें।
2. तर्कभाषा और वेदान्तसार के विभिन्न मूलभूत सिद्धान्तों और अवधारणाओं के गहन अध्ययन से विकसित विचारों को प्राप्त करने तथा उनकी अन्य विभिन्न दार्शनिक विचारों से तुलना करने में सक्षम होंगे।
3. विभिन्न दार्शनिक प्रणालियों और मतों की उत्पत्ति और विकास में सक्षम होंगे। विभिन्न विषम परिस्थितियों में निर्णय लेने में सक्षम होंगे।
4. विभिन्न दर्शनों के बीच न्यूनतम तथा मामूली भेद को भी जानने में सक्षम होंगे। छात्रों में तार्किक क्षमता का विकास होगा।

इकाई – 1 तर्कभाषा – केशवमिश्र (प्रामाण्यवाद तक) व्याख्या — 12

इकाई – 2 तर्कभाषा पर समीक्षात्मक प्रश्न — 12

इकाई – 3 वेदान्तसार – सदानन्द व्याख्या — 12

इकाई – 4 वेदान्तसार पर आधारित प्रश्न — 12

इकाई – 5 चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शन पर समीक्षात्मक प्रश्न। — 12
(तीन दर्शनों में से किन्हीं दो पर प्रश्न पूछे जाएंगे किन्तु किसी एक प्रश्न को हल करने का विकल्प होगा)

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. तर्कभाषा – केशवमिश्र
2. वेदान्तसार – सदानन्द, संपादक रमाशंकर तिवारी
3. भारतीय दर्शन – आचार्य बलदेव उपाध्याय
4. भारतीय दर्शन – डॉ. राधाकृष्णन

18.8.21

18-8-21

18/08/21

Discipline Specific Elective Course

Semester : प्रथम सेमेस्टर

Paper Title : SAC 102 भारतीय नीतिशास्त्र (दर्शन विभाग)

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नीतिशास्त्र के ज्ञान द्वारा छात्रों में नैतिकता का विकास करना है। सत्य, पुरुषार्थ एवं योग के सम्यक ज्ञान द्वारा छात्रों में जीवनोपयोगी कौशल तथा समाजोपयोगी उचित व्यवहार की शिक्षा देना है। समकालीन भारतीय नीतिशास्त्रीयों के विशेष नीति–गुणों से परिचित कराना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम–

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र याग–विधानों एवं पुरुषार्थ चतुष्टय के गूढ़ अर्थ को आत्मसात कर सकेंगे।
2. भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम् अंग योग दर्शन के महत्त्व से परिचित होंगे तथा उसके विशेषताओं को जीवन में प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
3. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भगवद्गीता के निष्काम कर्मयोग आदि शिक्षाओं से पूर्ण परिचित होकर उन शिक्षाओं से जीवन को उन्नत तथा समृद्ध बनाने में सक्षम होंगे।
4. विभिन्न दर्शनों के अध्ययन तथा विश्लेषण से विस्तृत बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।

इकाई – 1	भारतीय नीतिशास्त्र के सामान्य लक्षण, भारतीय नीतिशास्त्र का विकास, ऋत एवं सत्य, ऋण एवं यज्ञ, योग एवं क्षेम, पुरुषार्थ	12
इकाई – 2	भगवद्गीता निष्काम कर्मयोग, स्वधर्म, लोकसंग्रह बौद्ध चिंतन में उपाय कौशल बुद्धयान तथा ब्रह्मविहार मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा जैन परम्परा में त्रिरत्न दर्शन ज्ञान एवं चरित्र	12
इकाई – 3	योग दर्शन के अनुसार यम तथा नियम, विदुर नीति, कौटिल्य नीति	12
इकाई – 4	मीमांसा के अनुसार धर्म विधि–निषेध, अर्थवाद, शास्त्रापेदेश, अपूर्व, साध्य–साधन, इतिकर्त्तव्यता, कर्म–सिद्धान्त के नैतिक अपादन	12
इकाई – 5	समकालीन भारतीय नीतिशास्त्र विवेकानन्द (सदगुण), गाँधी (एकादश–व्रत) विनाबा भावे (भूदान एवं वैश्विक नैतिकता)	12

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. बी एल आत्रेय – भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास
2. शांति जोशी – नीतिशास्त्र
3. S.K. Maitra-The Ethics of the Hindus
4. R.Prasad- Karma Causation and Retributive Morality
5. Sri Aurobindo-Essays on the Gita

18.8.21

18/08/21

Discipline Specific Elective Course
Semester : प्रथम सेमेस्टर
Paper Title : SAS 101 Skill Development

Skill Development का पाठ्यक्रम एवं अंक विश्वविद्यालय के कौशल विकास केन्द्र के द्वारा निर्धारित किये जायेंगे।

18.8.21

Discipline Specific Core Course

Semester : द्वितीय सेमेस्टर

Paper Title : SAC 104 सांख्य एवं मीमांसा

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को भारतीय दर्शन के दो प्रमुख ग्रन्थों सांख्यकारिका एवं अर्थसंग्रह के अध्ययन–अध्यापन से सांख्य एवं मीमांसा की मूलभूत अवधारणाओं तथा सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम –

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. सांख्य मतानुसार सृष्टि प्रक्रिया को समझने में सक्षम होंगे।
2. 25 तत्त्वों का सृष्टि निर्माण में योगदान तथा इनके द्वारा कैसे परिवर्तन होता है और कौनसा तत्त्व कौन सी भूमिका का निर्वहन करता है, यह पूर्णरूपेण समझने में सक्षम होंगे।
3. सांख्य और मीमांसा दार्शनिकों द्वारा प्रतिपादित तत्त्वमीमांसा तथा ज्ञानमीमांसा को स्पष्ट करने में सक्षम होंगे।
4. सांख्य और मीमांसा की कई महत्त्वपूर्ण शब्दावली से परिचित होंगे।

इकाई – 1 सांख्यकारिका – ईश्वरकृष्ण (व्याख्या)	12
इकाई – 2 सांख्यकारिका पर आधारित प्रश्न	12
इकाई – 3 मीमांसादर्शन – अर्थसंग्रह – (व्याख्या) श्री लौगाक्षिभास्कर	12
इकाई – 4 अर्थसंग्रह पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न	12
इकाई – 5 आस्तिक दर्शन पर आधारित तुलनात्मक प्रश्न (दो प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर देना होगा)	12

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. सांख्यकारिका संपादक डॉ. आद्याप्रसाद मिश्र इलाहाबाद
2. सांख्यकारिका – संपादन डॉ. ब्रजमोहन चतुर्वेदी दिल्ली
3. अर्थसंग्रह – संपादक पं. शोभित मिश्र चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
4. भारतीय दर्शन – डॉ. उमेश मिश्र

18.8.21

Discipline Specific Core Course
Semester : द्वितीय सेमस्टर
Paper Title : SAC 105 काव्यशास्त्र

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

मम्मट का काव्यप्रकाश संस्कृत साहित्य में काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है जिसमें काव्य लक्षण, रस, ध्वनि, गुण–दोष, रीति और अलंकार की वैचारिक चर्चा पर एक संतुलित दृष्टिकोण प्राप्त होता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों को काव्यप्रकाश के माध्यम से काव्य के विभिन्न आयामों अर्थात् प्रयोजन, लक्षण और काव्य भेदों का परिचय प्राप्त कराना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होंगे–

1. काव्य भावों को आत्मसात करने और उसके आनन्द के आस्वादन में सक्षम होंगे।
2. काव्य गत सिद्धान्तों, उनके महत्त्व तथा काव्य रस का विशेष ज्ञान प्राप्त करेंगे।
3. विभिन्न काव्यशास्त्रीय चिन्तकों तथा सिद्धान्तों के आलोचनात्मक विश्लेषण में सक्षम होंगे।
4. काव्यप्रकाश तथा अन्य काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों के अध्ययन से अन्य ग्रन्थों की व्याख्या तथा विश्लेषण की विशेष क्षमता का विकास होगा।

इकाई – 1 प्रमुख काव्यशास्त्रीय चिन्तक एवं सिद्धान्त	12
इकाई – 2 काव्यप्रकाश प्रथम उल्लास	12
इकाई – 3 साहित्यदर्पण – प्रथम परिच्छेद	12
इकाई – 4 काव्यप्रकाश द्वितीय एवं चतुर्थ उल्लास – रसभेद पर्यन्त	12
इकाई – 5 ध्वन्यालोक – प्रथम उद्योत	12

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. सत्यदेव चौधरी
2. भारतीय साहित्यशास्त्र – डॉ. गणेश त्र्यंबक देशपाण्डे
3. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र
4. भारतीय काव्यशास्त्र मीमांसा – सपांदक डॉ. हरिनारायण दीक्षित
5. काव्य प्रकाश – संपादक – वामनाचार्य मालवीकर
6. काव्यप्रकाश – आचार्य विश्वेश्वर सिद्धांत शिरामेणि
7. संस्कृत पोयटिक्स – ए स्टडी ऑफ एस्थेरिक्स – एस.के. डे.
8. साहित्य दर्पण – संपादक सत्यव्रत शास्त्री
9. ध्वन्यालोक – संपादक डॉ. चंद्रिका प्रसाद शुक्ल

Discipline Specific Core Course
Semester : द्वितीय सेमेस्टर
Paper Title : SAC 106 भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत साहित्य में संरक्षित भारतीय संस्कृति के ज्ञान से परिचित कराना। वैदिक तथा लौकिक संस्कृति के महत्त्व से छात्रों अवगत होंगे। पर्यावरण के अध्ययन से छात्रों में पर्यावरण के प्रति चेतना को जाग्रत करना तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना। प्राचीन भारतीय संस्कृति में धर्म के अर्थ एवं वैशिष्ट्य से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. वैदिक काल की भारतीय संस्कृति, धर्म के स्वरूप को जानेंगे।
2. भारतीयसंस्कृति के अध्ययन द्वारा भारत की प्राचीन गौरवशाली परंपरा से परिचित होंगे।
3. संस्कृत साहित्य के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान से विशेष परिचित होंगे।
4. पाठ्यकम में पर्यावरण के अध्ययन से छात्र पर्यावरण के स्वरुप को भली–भांति समझेंगे तथा पर्यावरण के महत्त्व को जानेंगे।
5. पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरुक होंगे तथा स्वच्छ पर्यावरण के लिये सचेत होंगे।

इकाई – 1	संस्कृतवाङ्मय में धर्म का अर्थ, स्वरूप, महत्त्व एवं उपादान धर्म का वैशिष्ट्य एवं प्रदेय	12
इकाई – 2	संस्कृति का अर्थ, परिभाषा, विशेषताएँ, संस्कृति के तत्त्व, भारतीय संस्कृति का विकास,संस्कृति और सभ्यता में अन्तर, भारतीय संस्कृति का अन्य संस्कृतियों पर प्रभाव व सम्बन्ध।	12
इकाई – 3	संस्कृत साहित्य में समाज, जीवन मूल्य, राष्ट्रीयता, नवाचार (संस्कृत में अभिनव प्रयोग) तथा स्वतंत्रता संग्राम।	12
इकाई – 4	पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा एवं महत्त्व, पर्यावरण के तत्त्व एवं महत्त्व,पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाले घटक, पर्यावरण संरक्षण के उपाय एवं संस्कृत साहित्य में पर्यावरण।	12
इकाई – 5	इतिहास का स्वरूप, महत्त्व स्रोत तथा इतिहास एवं पुराण में अंतः सम्बन्ध।	12

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका – राम जी उपाध्याय, वाराणसी
2. प्राचीन भारत का इतिहास – रमाशंकर त्रिपाठी
3. प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता – अनुवादक गणाकर मूले, राजकमल प्रकाशन
4. भारतीय कला – वासुदेव शरण अगव्राल
5. धर्मशास्त्र का इतिहास – पी.व्ही. काणे
6. संस्कृत साहित्य में समाज – चित्रा शर्मा
7. पर्यावरण चिन्तन – डॉ. एच.आर. रैदास

18/08/21 18.8.21 18/8/21

Discipline Specific Elective Course

Semester : द्वितीय सेमेस्टर

Paper Title : SAE 103 A काव्य (मेघदूत एवं कुमारसंभव)

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य कालिदास की विशिष्ट रचनाओं के सौन्दर्य से छात्रों को अवगत कराना है। कालिदास की कालजयी रचनाओं के भाषा–शिल्प, अलंकारों तथा उपमा प्रयोग के वैशिष्ट्य से छात्रों को परिचित कराना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होंगे–

1. छात्र कालिदास की दो महानतम् कृतियों के वैशिष्ट्य तथा सौन्दर्य से परिचित होंगे।
2. विश्व में अन्य काव्य कृतियों में कालिदास की रचनाओं के गौरवपूर्ण स्थान से अवगत होंगे तथा उन कृतियों से इन रचनाओं के मूलभूत अंतर को समझ सकेंगे।
3. कालिदास की इन दो विशिष्ट रचनाओं में विभिन्न मानवीय रूप, भावनाओं के चित्रण से परिचित होंगे।
4. इन रचनाओं के अध्ययन से छात्र अलंकार, छन्द,उपमा तथा प्रकृति चित्रण के प्रयोग से काव्यगत सौन्दर्य से भली–भांति अवगत होंगे तथा काव्य निर्माण में योगदान देने वाले रस, ध्वनि और अन्य साहित्यिक तत्त्वों की अभिव्यक्तियों को समझनें में सक्षम होंगें

इकाई – 1 मेघदूतम् (पूर्वमेघ) (दो पद्यों की व्याख्या)	12
इकाई – 2 मेघदूतम् (उत्तरमेघ) (दो पद्यों की व्याख्या)	12
इकाई – 3 मेघदूत पर समीक्षात्मक प्रश्न	12
इकाई – 4 कुमारसभंवम् – पंचम सर्ग (दो पद्यों की व्याख्या)	12
इकाई – 5 कुमारसभंवम् पर समीक्षात्मक प्रश्न	12

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. मेघदूतम् – कालिदास
2. कुमारसंभवम् – कालिदास
3. महाकवि कालिदास – रमाशंकर तिवारी
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय
5. कालिदास : अपनी बात – डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी

18.8.21

18-8-21 18/08/21 18/8/21

Discipline Specific Elective Course

Semester : द्वितीय सेमेस्टर

Paper Title : SAE 104 काव्य (कर्पूरमंजरी एवं विद्धशालभंजिका)

कुल अंक 100 (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

महाकवि राजशेखर की प्राकृत भाषा में निबद्ध दो अनुपम कृतियों के साहित्यिक सौन्दर्य से छात्रों को परिचित कराना एवं रचनाओं में चित्रित तात्कालिक सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम–

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. संस्कृत भाषा से निःसृत प्राकृत भाषा के शिल्प तथा सौन्दर्य अनुभूति में सक्षम होंगे।
2. काव्य विधाओं में अनन्य सट्टक काव्य विधा को समझने तथा तादृश संरचना में निपुण होंगे।
3. इन ग्रन्थों के अनुशीलन से राजशेखर की काव्य प्रतिभा को समझने में सक्षम होंगे।

इकाई – 1 कर्पूरमंजरी (दो पद्यों की व्याख्या)	12
इकाई – 2 कर्पूरमंजरी पर समीक्षात्मक प्रश्न	12
इकाई – 3 विद्धशालभंजिका (दो पद्यों की व्याख्या)	12
इकाई – 4 विद्धशालभंजिका पर समीक्षात्मक प्रश्न	12
इकाई – 5 आचार्य राजशेखर पर समीक्षात्मक प्रश्न	12

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. कर्पूरमंजरी – राजशेखर
2. विद्धशालभंजिका – राजशेखर
3. राजशेखर रूपकावली – रमेश कुमार पाण्डेय
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय
5. आचार्य राजशेखर – श्यामा वर्मा

18.8.21

Discipline Specific Elective Course
Semester : द्वितीय सेमेस्टर
Paper Title : SAS 102 Skill Development

Skill Development का पाठ्यक्रम एवं अंक विश्वविद्यालय के कौशल विकास केन्द्र के द्वारा निर्धारित किये जायेंगे ।

18-8-21 18/08/21

18.8.21

Discipline Specific Core Course
Semester : तृतीय सेमेस्टर
Paper Title : SAC 107 महाकाव्य

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य पद्य काव्य विधाओं में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं महाकवियों द्वारा सर्वाधिक प्रयुक्त काव्यविधा महाकाव्य से परिचित कराना तथा बृहत्त्रयी एवं लघुत्रयी में परिगणित महाकवि माघ एवं कालिदास कृत रचनाओं में क्रमशः प्रौढ़ी एवं समासोक्ति जन्य काव्य सौन्दर्य को प्रस्फुटित करना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. इन दो संस्कृत की महत्तम कृतियों के माध्यम से संस्कृतनिष्ठ व्यासता (विस्तार) समासता (संक्षेपण) से परिचित होंगे।
2. कालजयी इन रचनाओं के अध्ययन के पश्चात् काव्य सौन्दर्याधायक छन्द, गुण, अलंकार के अन्वेषण में समर्थ होंगे।
3. काव्यात्मभूत रसों के आस्वादन की शक्ति को प्राप्त करेंगे।
4. श्रव्य काव्य के अंतर्गत पद्य काव्य के स्वरूप आदि का सर्वांगीण ज्ञान प्राप्त करेंगे।

इकाई – 1 शिशुपालवध – (प्रथमसर्ग) माघ, दो पद्यों की व्याख्या	12
इकाई – 2 शिशुपालवध – पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न	12
इकाई – 3 रघुवंश – (पंचम सर्ग कालिदास, दो पद्यों की व्याख्या)	12
इकाई – 4 रघुवंश – पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न	12
इकाई – 5 महाकाव्य का स्वरूप एवं महाकाव्यों के उद्भव और विकास पर एक प्रश्न	12

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. शिशुपालवध – माघ
2. रघुवंश – कालिदास
3. संस्कृत कविदर्शन – डॉ. भोलाशंकर व्यास
4. संस्कृत सुकवि समीक्षा – आचार्य बलदेव उपाध्याय

18.8.21

18-8-21

18/08/21

Discipline Specific Core Course
Semester : तृतीय सेमेस्टर
Paper Title : SAC 108 नाट्यशास्त्र

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को नाट्यशास्त्रीय कथानक, अभिनेता, रस जैसे विभिन्न नाट्य तत्त्वों से परिचित कराना है। नाट्य के विभिन्न भेदों से परिचित कराते हुये नाट्य संरचना में छात्रों को सक्षम बनाना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. निर्धारित ग्रन्थों की व्याख्या तथा आलोचनात्मक विश्लेषण में क्षमता प्राप्त करेंगे।
2. एक नाटकीय रचना की आलोचना में विभिन्न रूपों अर्थात कथानक, अभिनेता और रस आदि का गहन ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
3. भरतमुनि के नाट्यशास्त्र का संपूर्ण ज्ञान द्वारा भारतीय शास्त्रीय रंगमंच पर इसकी प्रासंगिकता को समझेंगे।
4. अलंकार शास्त्र के प्रसिद्ध साहित्यकारों के महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक योगदान से परिचित होंगे।

इकाई – 1 प्रमुख नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ एवं चिन्तक	12
इकाई – 2 नाट्यशास्त्र – भरतमुनि (द्वितीय अध्याय)	12
इकाई – 3 नाट्यशास्त्र – भरतमुनि (षष्ठ अध्याय)	12
इकाई – 4 दशरूपक – धनंजय प्रथम प्रकाश (सन्धिभेद छोड़कर)	12
इकाई – 5 दशरूपक – धनंजय द्वितीय प्रकाश (नायक और नायिका के सामान्य भेद)	12

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. संस्कृत आलोचना – डॉ. बलदेव उपाध्याय
2. नाट्यशास्त्र – भरतमुनि संपादक – बाबूलाल शुक्ल
3. नाट्यशास्त्र बृहत्कोश – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी
4. भारतीय काव्यशास्त्रकोश – बिहार राष्ट्रभाषा परिषद
5. दशरूपक – धनंजय, संपादक – भोलाशंकर व्यास
6. दशरूपक – धनंजय, संपादक – श्रीनिवास शास्त्री

18.8.21

18-8-2

18/08/21

Discipline Specific Core Course
Semester : तृतीय सेमेस्टर
Paper Title : SAC 109 संस्कृत वाङ्मय एवं आधुनिक विश्व

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्रों से परिचित कराना है, तथा धर्म के प्रमुख आधार–स्तंभ स्मृतियों से अवगत कराना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होंगे–

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् प्राचीनतम् गौरवमयी भारतीय संस्कृति के उत्कृष्ट कर्मानुष्ठानों से पूर्ण परिचित होंगे।
2. स्मृति आदि ग्रन्थों में उल्लिखित प्राचीन भारतीय कानूनी, राजनीतिक, धार्मिक और संवैधानिक व्यवस्थों से पूर्ण परिचित होकर आधुनिक भारतीय व्यवस्थाओं से तुलना करने में सक्षम होंगे।
3. आचार्य कौटिल्य के गहन चिंतनजन्य वेदसम्मत गूढ़ रहस्यों को समझने में सक्षम होंगे।
4. आर्षकाव्यों के अध्ययन से नैतिक,मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों के आदर्श रूप को अपने आचरण में ढालने में सक्षम होंगे।

इकाई – 1 कौटिल्य अर्थशास्त्र विनयाधिकारिक प्रथम अधिकरण 12

इकाई – 2 आर्षकाव्य रामायण एवं महाभारत

1. उत्तरवर्ती साहित्य पर प्रभाव
2. आधुनिक युग में प्रासंगिकता
3. मानवीय मूल्य
4. भारतीय संस्कृति 12

इकाइ – 3 **मनुस्मृति** – धर्मलक्षण, धर्म के घटक, विवाह के भेद, पुत्र के प्रकार, राजधर्म 12

इकाई – 4 **मनुस्मृति** – सृष्टिप्रक्रिया, संस्कार, राजव्यवस्था, उत्तराधिकार, पालक, वर्णाश्रम 12

इकाई – 5 प्रमुख पुराणों का परिचय 12

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. कौटलीय अर्थशास्त्र – सम्पादक वाचस्पति गैरोला
2. पुराण विमर्श -- बलदेव उपाध्याय
3. महाकवि वाल्मीकि -- राधावल्लभ त्रिपाठी
4. संस्कृत वाङ्मय का इतिहास – डॉ. सूर्यकान्त
5. मनुस्मृति – महर्षि मनुकृत

18.8.21

18/08/21

Discipline Specific Elective Course

Semester : तृतीय सेमेस्टर

Paper Title : SAE 105 साहित्यशास्त्र (काव्यालङ्कार एवं काव्यप्रकाश)

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भारतीय काव्यशास्त्र के आचार्य मम्मट द्वारा विरचित काव्यप्रकाश के संपूर्ण अध्यापन द्वारा छात्रों में काव्यशास्त्रीय प्रतिभा का विकास करना है जिससे वह भी उत्तम काव्य रचना में सक्षम हो सकें। साथ ही भामह जैसे अलंकारशास्त्री के ग्रन्थ के अध्ययन द्वारा भी काव्य में अलंकार तत्त्वों की उपयोगिता तथा अनिवार्यता से अवगत कराना है। छात्रों में विभिन्न प्रकार के काव्य–दोष, काव्यगुण और काव्य अलंकारों के ज्ञान से परिपुष्ट करना भी इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम–

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होंगे–

1. मम्मट द्वारा प्रतिपादित काव्य दोषों, अलंकारों, रस आदि काव्य के तत्त्वों के अनुशीलन में परिपक्व होंगे।
2. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र के सूक्ष्मतम बिन्दुओं से अवगत होते हुये काव्यनिर्मातृशक्ति में छात्र सक्षम होंगे।
3. साहित्यशास्त्र के व्याकरणिक, मीमांसक, दार्शनिक आदि विभिन्न तत्त्व छात्रों को हस्तामलकवद् होंगे।
4. साहित्य के अध्ययन द्वारा लुप्तप्रायः भारतीय ज्ञान राशि को संरक्षित तथा समृद्ध करने का भाव छात्रों में विकसित होगा।

इकाई – 1 काव्यालङ्कार भामह–प्रथम परिच्छेद 12

इकाई – 2 काव्यप्रकाश – मम्मट (पंचम उल्लास) 12

इकाई – 3 काव्यप्रकाश – सप्तम उल्लास से रस दोष 12

इकाई – 4 काव्यप्रकाश – अष्टम उल्लास 12

इकाई – 5 काव्यप्रकाश – नवम तथा दशम उल्लास के अधोलिखित अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण

(अनुप्रास, यमक, उपमा (भेद रहित), रूपक, निदर्शना, अपह्नुति, विभावना, विशेषोक्ति, उत्प्रेक्षा, अनन्वय, व्यतिरेक, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, स्वभावोक्ति, दीपक) 12

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. काव्यालङ्कार – भामह
2. काव्यप्रकाश – मम्मट
3. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. सत्यदेव चौधरी
4. भारतीय साहित्यशास्त्र – डॉ. गणेश त्र्यंबक देशपाण्डे

18.8.21

18/08/21

Discipline Specific Elictive Course

Semester : तृतीय सेमेस्टर

Paper Title : SAE 106 साहित्यशास्त्र (काव्यादर्श एवं काव्यमीमांसा)

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भारतीय काव्यशास्त्र के विविध आयामों एवं मार्गो के प्रणेता महाकवि दण्डी तथा महाकवि राजशेखर के काव्यशास्त्रीय चिंतन से अवगत कराना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. काव्यमार्गों में उल्लिखित गुण एवं अलंकार मार्ग (संप्रदाय) से पूर्ण परिचित होंगे एवं उसके विस्तार को समझ सकेंगे।
2. निर्देशित ग्रन्थों के अध्ययन से काव्यशास्त्रीय समीक्षा की शक्ति को अर्जित कर सकेंगे।
3. राजशेखर के मौलिक चिंतन से काव्य विधाओं का सहजतया ज्ञान उपार्जित करेंगे।
4. निर्धारित ग्रन्थों के अध्ययन से दृश्य एवं श्रव्य उभयविध काव्य परंपरा को पूर्णरूपेण समझ सकेंगे।

इकाई – 1 काव्यादर्श– दण्डी प्रथम परिच्छेद	12
इकाई – 2 काव्यमीमांसा – राजशेखर (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अध्याय)	12
इकाई – 3 काव्यमीमांसा – राजशेखर (चतुर्थ, पंचम एवं षष्ठ अध्याय)	12
इकाई – 4 काव्यमीमांसा – राजशेखर (सप्तम, अष्टम एवं नवम अध्याय)	12
इकाई – 5 काव्यमीमांसा – राजशेखर (एकादश एवं द्वादश)	12

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. काव्यमीमांसा – राजशेखर
2. काव्यादर्श – दण्डी
3. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. सत्यदेव चौधरी
4. भारतीय साहित्यशास्त्र – डॉ. गणेश त्र्यंबक देशपाण्डे
5. काव्यमीमांसा का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ. उमाशंकर तिवारी

18-8-21

18-8-21 18/08/21

18/8

Discipline Specific Elective Course
Semester : तृतीय सेमेस्टर
Paper Title : SAS 103 Skill Development

Skill Development का पाठ्यक्रम एवं अंक विश्वविद्यालय के कौशल विकास केन्द्र के द्वारा निर्धारित किये जायेगें ।

Discipline Specific Core Course
Semester : चतुर्थ सेमेस्टर
Paper Title : SAC 110 रूपक

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को महत्त्वपूर्ण साहित्यिक रचनाओं के अध्ययन के माध्यम से संस्कृत साहित्य की समृद्ध परंपराओं से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होंगे–

1. पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक मूल्यों को समझने में सक्षम होंगे।
2. साहित्यिक रचनाओं के शिल्प तथा सौन्दर्य अनुभूति में सक्षम होंगे।
3. संस्कृत रूपकों के संरचनात्मक स्वरूप को समझेंगे तथा रूपकों के विभिन्न प्रकारों के सूक्ष्म स्वरूपों को भी जानेंगे।
4. प्राचीन भारत के वैभवशाली इतिहास से पूर्ण परिचित होंगे।

इकाई – 1 मृच्छकटिकम् – शूद्रक (प्रथम से चतुर्थ अंक तक व्याख्या)	12
इकाई – 2 वेणीसंहार – भट्टनारायण (प्रथम से चतुर्थ अंक तक व्याख्या)	12
इकाई – 3 इकाई एक एवं दो में निर्धारित नाट्यकृतियों पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न	12
इकाई – 4 रत्नावली – हर्ष (एक पद्य की व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)	12
इकाई – 5 प्रमुख नाट्यकृतियों का परिचय	12

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. मृच्छकटिकम् – सम्पादक – रमाशंकर तिवारी
2. वेणीसंहार – भट्टनारायण
3. रत्नावली – हर्ष
4. संस्कृत नाटक – ए.बी. कीथ
5. संस्कृत नाटक – कान्तिकिशोर भरतिया
6. संस्कृत कविदर्शन – भोलाशंकर व्यास
7. संस्कृत सुकवि समीक्षा – बलदेव उपाध्याय

18.8.21

18/08/21

Discipline Specific Core Course
Semester : चतुर्थ सेमेस्टर
Paper Title : SAC 111 गद्य, पद्य तथा चम्पू

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य श्रव्य काव्य की समस्त विधाओं को सांगोपांग बोध कराना एवं प्रतिनिधि ग्रन्थों से अवगत कराना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होंगे–

1. श्रव्यकाव्य की समस्त काव्य विधाओं के वैशिष्ट्य से पूर्ण परिचित होंगे।
2. काव्य निबद्ध लोकोत्तर वर्णन से परिचित होकर भारतीय भौगोलिक ज्ञान प्राप्त करेंगे।
3. महाकवि बाणभट्ट के अध्ययन से भाषावैशिष्ट्य एवं व्याकरणनिष्ठ समस्त पदजन्य चातुर्य को समझ सकेंगे।
4. काल विशिष्ट पल्लवित–पुष्पित आदि सर्वविध प्रकृति के समुचित ज्ञान को प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई – 1 कादम्बरी	(महाश्वेता वृत्तान्त)	– बाणभट्ट	12
इकाई – 2 रघुवंशम्	(त्रयोदश सर्ग)	– कालिदास	12
इकाई – 3 नैषधीयचरितम्	(प्रथम सर्ग)	– श्रीहर्ष	12
इकाई – 4 नलचम्पू	(प्रथम उच्छ्वास)	– त्रिविक्रमभट्ट	12
इकाई – 5 गद्य, पद्य और चम्पू काव्यों का उद्भव एवं विकास			12

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. कादम्बरी – बाणभट्ट
2. रघुवंशम् – कालिदास
3. नैषधीयचरितम् – श्री हर्ष
4. नलचम्पू – त्रिविक्रम भट्ट
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय
6. संस्कृत कवि दर्शन – डॉ. भोलाशंकार व्यास
7. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी
8. संस्कृत सुकवि समीक्षा – डॉ. बलदेव उपाध्याय

18-8-21 18/08/21 18.8.21

Discipline Specific Core Course

Semester : चतुर्थ सेमेस्टर

Paper Title : SAC 112 व्याकरण, अनुवाद एवं निबन्ध

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत निबंध लेखन और अन्य भाषाओं से संस्कृत मे अनुवाद की कला में प्रशिक्षित करना है। लघुसिद्धान्तकौमुदी के पाठ से व्याकरण के कुछ अनुप्रयुक्त भागों को भी छात्रों में संस्कृत भाषा के कौशल को विकसित करने के उद्देश्य से पढ़ाया जायेगा जो संस्कृत भाषा में अच्छा निबंध लिखने और अनुवाद करने की क्षमता को बढ़ायेगा।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम–

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. भाषा, भाव, विचार, शब्द, अर्थ और इनके पारस्परिक संबंध को सम्यक रूप से जानने में सक्षम होंगे।
2. शब्द का प्रयोग, उसका अर्थ ग्रहण कर वाक्य रचना में प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
3. व्याकरण के सम्यक ज्ञान से संस्कृत भाषा में बोलने, लिखने की क्षमता का विकास होगा।
4. आधुनिक भाषा के आगमन के साथ संस्कृत भाषा के विकास के संदर्भ में संस्कृत भाषा के निरीक्षण और विश्लेषण में सक्षम होंगे।

इकाई – 1 संज्ञाप्रकरणम् – सिद्धान्तकौमुदी	12
इकाई – 2 कारकप्रकरणम् – सिद्धान्तकौमुदी (प्रथमा से तृतीया विभक्ति तक)	12
इकाई – 3 कारकप्रकरणम् – सिद्धान्तकौमुदी (चतुर्थी से सप्तमी विभक्ति तक)	12
इकाई – 4 संस्कृत में निबंध	12
इकाई – 5 अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत में), देवनागरी से रोमन में लिप्यन्तर	12

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. सिद्धान्तकौमुदी – तत्त्वबोधिनी टीका
2. सिद्धान्तकौमुदी – पं. बालकृष्ण पंचाली
3. बृहद् अनुवादचन्द्रिका – चक्रधर हंस नौटियाल
4. प्रौढ़रचनानुवाद कौमुदी – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
5. संस्कृत–निबन्धावलिः – डॉ. रामजी उपाध्याय
6. संस्कृत निबन्धचन्द्रिका – डॉ. पारस नाथ द्विवेदी

18-8-21 18/08/21 18.8.21 18/8/21

Discipline Specific Elective Course

Semester : चतुर्थ सेमेस्टर

Paper Title : SAE 107 विशेषकवि (कालिदास)

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य कालिदास की विभिन्न कृतियों के सौन्दर्य तथा चारुता से अवगत कराना है जिससे छात्रों में संस्कृतसाहित्य के प्रति रुचि जाग्रत हो।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम–

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. निर्धारित रचनाओं के अध्ययन से समकालीन परिस्थियों तथा विषय के संदर्भ में ज्ञान प्राप्त होगा।
2. निर्धारित रचनाओं के रंगमंच पर अभिनय करने में सक्षम होंगे।
3. महाकवि कालिदास की रचनाओं में वर्णित प्रकृति वर्णन के माध्यम से प्राकृतिक सौन्दर्य को अनुभूत कर सकेंगे तथा प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुक होंगे।

इकाई – 1 रघुवंश चतुर्दश सर्ग – व्याख्या	12
इकाई – 2 अभिज्ञानशाकुन्तलम् – व्याख्या	12
इकाई – 3 मालविकाग्निमित्रम् – व्याख्या	12
इकाई – 4 विक्रमोर्वशीयम् – व्याख्या	12
इकाई – 5 कालिदास की सभी कृतियों पर समीक्षात्मक प्रश्न	12

18.8.21

18/08/21

18.8.21

18/8/21

Discipline Specific Elective Course
Semester : चतुर्थ सेमेस्टर
Paper Title : SAE 108 विशेषकवि (भवभूति)

कुल 100 अंक (60+40)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नाट्य शास्त्रीय लक्षणों से इतर दृश्य काव्य के प्रयोग पर बल देना है। नाट्य शास्त्र से इतर होने पर भी रसान्वित दृश्य काव्य पर बल देना है तथा नवीन कवि कल्पनाओं को उकेरना है।

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र निम्नांकित वैशिष्टय से परिपूर्ण होंगे–

1. भवभूति के रूपकों के अध्ययन से छात्रों को नव–नाट्यधर्मिता का बोध होगा।
2. रसों के परिपाक में कुशलता एवं अभिनवत्व प्राप्त होगा।
3. भवभूति के रूपकों में प्रयुक्त सूक्तियों के अध्ययन से लोकव्यवहार का ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई – 1 उत्तररामचरितम् – व्याख्या (5 से 7 अंक)	12
इकाई – 2 महावीरचरितम् – व्याख्या (1 से 4 अंक)	12
इकाई – 3 मालतीमाधवम् – व्याख्या (1 से 4 अंक)	12
इकाई – 4 भवभूति के रूपकों में प्रयुक्त सूक्तियों का विश्लेषण	12
इकाई – 5 भवभूति एवं उनकी नाट्यकृतियों पर समीक्षात्मक प्रश्न	12

18/08/21

18.8.21